॥ श्रीः ॥

विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

१२३

श्रीमहर्षि-वेदव्यास-प्रणीत—

कल्किपुराण

मूल और भाषानुवाद सहित

सम्पादक एवं व्याख्याकार

रामस्वरूप शर्मा

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी

॥ श्रीः ॥

कल्किपुराण

भाषानुवादसहित ।

प्रथमोऽध्यायः ।

सेन्द्रा देवगणा मुनीश्वरजना लोकाः सपालाः सदा स्वं स्वं कर्म सुसिद्धये प्रतिदिनं भक्त्या भजन्त्युत्तमाः । तं विघ्नेशमनन्तमच्युतमजं सर्वज्ञसर्वाश्रयं वन्दे वैदिकतान्त्रिकादिविविधैः शास्त्रैः पुरो वन्दितम् ॥ १ ॥ नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥२॥ यद्दोर्दण्डकरालसर्पकवलज्वालाज्वलद्विग्रहा नेतुः सत्कर-

---

इन्द्रसहित सब देवगण, श्रेष्ठ मुनीश्वरोंकी मण्डलियें, सब लोक और लोकपाल सदा अपने २ कामको सिद्ध करनेके लिये प्रतिदिन भक्तिके साथ जिनका भजन करते हैं, वैदिक और तांत्रिक आदि अनेकों ग्रन्थोंने जिनकी वन्दना सबसे पहले की है, उन अनन्त, अच्युत, अजन्मा, सर्वज्ञ और सबके आश्रय विघ्नेशको प्रणाम है ॥ १ ॥ नारायण, नर, नरोत्तम और सरस्वती देवीको प्रणाम करके इतिहास पुराण आदिका कीर्त्तन करे ॥ २ ॥ भूमण्डल पर अत्याचार करनेवाले राजे, जिन भगवान्के भुजदण्डरूप कराल सर्पके ग्रास बन उसकी विषमयी ज्वालासे

बालदण्डदलिता भूपाः क्षितिक्षोभकाः । शश्वत् सैन्यव-
वाहनो द्विजजनिः कल्किः परात्मा हरिः । पायात् सत्ययुगादि-
कृत् स भगवान् धर्मप्रवृत्तिप्रियः ॥ ३ ॥ इति सूतवचः श्रुत्वा
नैमिषारण्यवासिनः । शौनकाद्या महाभागाः पप्रच्छुस्तं कथा-
मिमाम् ॥ ४ ॥ हे सूत ! सर्वधर्मज्ञ ! लोमहर्षणपुत्रक ! ।
त्रिकालज्ञ ! पुराणज्ञ ! वद भागवतीं कथाम् ॥ ५ ॥ कः
कलिः ? कुत्र वा जातो जगतामीश्वरः प्रभुः । कथं वा नित्य-
धर्मस्य विनाशः कलिना कृतः ? ॥ ६ ॥ इति तेषां वचः
श्रुत्वा सूतो ध्यात्वा हरिं प्रभुम् । सहर्षपुलकोद्भिन्नसर्वाङ्गः

भस्मीभूत शरीरवाले और जिन मर्यादापालक भगवान्की श्रेष्ठ तलवारके प्रहारसे टुकडे २ होजायँगे ऐसे, ब्राह्मणवंश में जन्म लेने वाले और निरन्तर सिंधदेशके घोड़े पर सवार होकर फिर सत्ययुगके आरंभकर्त्ता, धर्मप्रचारके प्रेमी, परमात्मा, विष्णुरूप, जगत्प्रसिद्ध कल्किभगवान् हमारी और तुम्हारी रक्षा करें ॥ ३ ॥ नैमिषारण्यके निवासी महाभाग शौनकादिकोंने सूतजीकी इस बातको सुनकर उनसे इस आगे कहीजानेवाली कथाके विषयमें प्रश्न किया ॥ ४ ॥ हे लोमहर्षणके पुत्र सूतजी ! तुम सकल धर्मोंको और भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान इन तीनों कालकी घटनाओंको जानते हो तथा सकल पुराणोंको भी जानते हो, इसलिये आप हमें कोई भगवत्की कथा सुनाइये ॥ ५ ॥ सकल संसारका स्वामी बनकर प्रभुता चलानेवाला कलियुग कौन है, और कहाँ उत्पन्न हुआ है, उस कलियुगने नित्य धर्मका नाश कैसे करडाला ? ॥६॥ उनकी इस बातको सुनकर आनंदके मारे सूतजीके सब शरीर पर रोमाञ्च खड़े होगये और प्रभु

प्राह तान् मुनीन् ॥ ७ ॥ सूत उवाच । शृणुध्वमिदमाख्यानं भविष्यं परमाद्भुतम् । कथितं ब्रह्मणा पूर्वं नारदाय विपृच्छते ॥ ८ ॥ नारदः प्राह मुनये व्यासायामिततेजसे । स व्यासो निजपुत्राय ब्रह्मराताय धीमते ॥ ९ ॥ स चाभिमन्युपुत्राय विष्णुराताय संसदि । प्राह भागवतान् धर्मान्नष्टादशसहस्रकान् ॥ १० ॥ तदा नृपे लयं प्राप्ते सप्ताहे प्रश्नशेषितम् । मार्कण्डेयादिभिः पृष्टः प्राह पुण्याश्रमे शुकः ११ तत्राहं तदनुज्ञातः श्रुतवानस्मि याः कथाः । भविष्याः कथयामीह पुण्या भागवतीः शुभाः ॥ १२ ॥ ताः शृणुध्वं महा-

---

श्रीहरिका ध्यान करके उन मुनियोंसे कहनेलगे ॥ ७ ॥ सूतजीने कहा, कि—आगेको होनेवाली, परम आश्चर्यसे भरी इस कथाको सुनो, यह बहुत समय पहले नारदजीके प्रश्न करने पर उनसे ब्रह्माजीने कही थी ॥ ८ ॥ नारदजीने यह कथा अपारतेजस्वी व्यासमुनिसे कही, उन व्यासदेवने अपने पुत्र बुद्धिमान् ब्रह्मरात (शुकदेव) से कही ॥ ९ ॥ उन्होंने भगवत्सम्बन्धी धर्मोंको अठारह सहस्र श्लोकोंमें भरीसभामें अभिमन्युके पुत्र विष्णुभक्त राजा परीक्षितको सुनाया ।१०। इसप्रकार सातदिन तक हरिचर्चा होनेके अनन्तर राजा परीक्षितका शरीर शान्त होगया, परन्तु प्रश्न पूरा नहीं हुआ, तब मार्कण्डेय आदि ऋषियोंने अपने पवित्र आश्रम में शुकदेवजीसे प्रश्न किया तब उन्होंने उत्तर देना आरम्भ किया ॥ ११ ॥ तहाँ मैंने मार्कण्डेय आदिकी आज्ञा पाकर जो आगेको होनेवालीं कथायें सुनी थीं, उन भगवान्की मङ्गलरूप पवित्र कथाओंको यहाँ कहता हूं ॥ १२ ॥ हे महाभाग